वैश्विक हलचल से सोने-चांदी में तेजी

1.57 लाख पार पहुंचा सोना

3.34 लाख तक पहुंची चांदी

नई दिल्ली, 21 जनवरी. मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर बुधवार को सोना पहली बार 1.57 लाख प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया. सोना वायदा 7,132 रुपये (4.75 प्रतिशत) बढ़कर 1,57,697 बोला गया.

वहीं, चांदी ने भी नया रिकॉर्ड बनाया और 3,33,900 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंची, जो 10,228 रुपये (3.16प्रतिशत) की तेजी दर्शाता है. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ग्रीनलैंड मुद्दे पर कार्रवाई और वैश्विक निवेशकों की सुरक्षित निवेश की ओर बढ़ती रुचि ने सोने-चांदी की कीमतों को बढ़ावा दिया. सोने और चांदी की कीमतों में वैश्विक और घरेलू कारणों से तेज़ी देखने को मिली.

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोना वायदा बुधवार को 7,132 रुपये की उछाल के साथ 1,57,697 प्रति 10 ग्राम पर पहुंचा, जो अब तक का सर्वाधिक स्तर है.

इसी तरह चांदी ने भी पहली बार 3,33,900 रुपये प्रति किलोग्राम का नया रिकॉर्ड बनाया, जिसमें 10,228 रुपये (3.16प्रतिशत) की वृद्धि दर्ज हुई.

निवेशकों को सुरक्षित धातुओं की ओर आकर्षित किया

विशेषज्ञों का कहना है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ग्रीनलैंड मुद्दे पर दिए गए बयानों ने निवेशकों को सुरक्षित धातुओं की ओर आकर्षित किया. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोना वायदा 4,867 डॉलर प्रति औंस पर पहुंच गया, जो 2.12प्रतिशत की तेजी को दर्शाता है. चांदी भी 95.03 डॉलर प्रति औंस पर पहुंची, जिसमें 0.42प्रतिशत की वृद्धि हुई. विशेषज्ञों के अनुसार, वैश्विक राजनीतिक अस्थिरता और डॉलर की कमजोरी के कारण निवेशकों ने सुरक्षित संपत्ति की ओर रुख किया, जिससे सोने और चांदी की कीमतों में तेजी देखी गई. यह लगातार तीसरी तेजी है, और भविष्य में भी निवेशक इस धातु पर नजर बनाए रख सकते हैं.

रुपया सात पैसे टूटा, ऐतिहासिक निचले स्तर पर बंद

मंबुई, 21 जनवरी. अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया मंगलवार को सात पैसे कमजोर हुआ और कारोबार की समाप्ति पर एक डॉलर 90.97 रुपये का बोला गया. यह रुपये का अब तक का निचला बंद स्तर है. इससे पहले, 16 दिसंबर 2025 को यह बीच कारोबार में 91.14 रुपये प्रति डॉलर तक लुढ़कने के बाद 90.93 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ था. भारतीय मुद्रा में यह लगातार पांचवीं गिरावट है. सोमवार को यह 11.25 पैसे टूटकर 90.90 रुपये प्रति डॉलर पर हुई थी. पांच दिन में यह 79.50 पैसे टूटी है. रुपया आज एक पैसे फिसलकर 90.91 रुपये प्रति डॉलर पर खुला. यह ऊपर 90.88 रुपये और नीचे 91.06 रुपये प्रति डॉलर तक गया.

पश्चिम रेलवे कवच सुरक्षा कार्य को मिलेगी रफ्तार

पश्चिम रेलवे में कवच सिस्टम पर 483 करोड़ प्रस्तावित

अश्विनी वैष्णव के नेतृत्व में रेलवे सुरक्षा मजबूत

नई दिल्ली, 21 जनवरी. रेल संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने तथा उन्नत तकनीकों को अपनाने की दिशा में, माननीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के नेतृत्व में, भारतीय रेल की अम्ब्रेला वर्क 2024-25 के अंतर्गत पश्चिम रेलवे पर कवच ट्रेन टक्कर रोधी प्रणाली के कार्यान्वयन हेतु दो महत्वपूर्ण मदवार कार्य प्रस्तावित किए गए हैं.

विचाराधीन इस प्रस्ताव की कुल अनुमानित लागत 483.65 करोड़ है, जिसमें निम्नलिखित कार्य शामिल हैं— इस महत्वपूर्ण खंड पर कवच प्रणाली की स्थापना हेतु 109.83 करोड़ की लागत प्रस्तावित की गई है, जिससे परिचालन सुरक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि होगी. कवच प्रणाली के सुचारु एवं प्रभावी संचालन को सुनिश्चित करने के लिए पश्चिम रेलवे के 436 मौजूदा इंजनों में आवश्यक संशोधन, उन्नयन एवं प्रोग्रामिंग हेतु 373.82 करोड़ का प्रावधान प्रस्तावित है.

> ये दोनों कार्य भारतीय रेल की व्यापक अम्ब्रेला परियोजना भारतीय रेल के शेष मार्गों पर दीर्घकालिक विकास संचार बैकबोन के साथ कवच की व्यवस्था (अम्ब्रेला वर्क 2024-25) का हिस्सा हैं, जिसे कार्य, मशीनरी एवं रोलिंग स्टॉक कार्यक्रम 2024-25 के अंतर्गत 27,693 करोड़ (पीएच) की लागत से स्वीकृति प्रदान की गई है. इस अम्ब्रेला परियोजना के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के लिए 2,800 करोड़ की उप-अम्ब्रेला राशि स्वीकृत की गई है. प्रस्तावित पहलें भारतीय रेल की रेल संरक्षा ढांचे को सुदृढ़ करने तथा आधुनिक सुरक्षा प्रणालियों के तीव्र कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं, जो माननीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के मार्गदर्शन एवं दृष्टिकोण के अनुरूप है.

दीपिंदर गोयल ने छोड़ा सीईओ पद

नई दिल्ली, 21 जनवरी. भारतीय कॉर्पोरेट जगत में बुधवार को एक बड़ा और अहम नेतृत्व परिवर्तन देखने को मिला, जब एटर्नल ग्रुप के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीपिंदर गोयल ने अपने पद से इस्तीफा देने की घोषणा की. यह जानकारी खुद गोयल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा की.

उन्होंने स्पष्ट किया कि शेयरधारकों की मंजूरी के बाद वे कंपनी के बोर्ड में वाइस चेयरमैन की भूमिका निभाते रहेंगे, जबकि अलबिंदर ढींडसा एटर्नल ग्रुप के नए सीईओ होंगे. यह बदलाव ऐसे समय में सामने आया है, जब एटर्नल ग्रुप—जिसका हिस्सा जोमैटो और ब्लिंकिट जैसी बड़ी कंपनियां हैं—तेजी से विस्तार और रणनीतिक पुनर्गठन के दौर से गुजर रहा है. गोयल का यह फैसला केवल एक पद परिवर्तन नहीं, बल्कि कंपनी को अगले स्तर पर ले जाने की सोच का हिस्सा माना जा रहा है. दीपिंदर गोयल को जोमैटो के संस्थापक और विजनरी लीडर के तौर पर जाना जाता है.

उन्होंने एक छोटी मेन्यू-स्कैनिंग कंपनी को भारत के सबसे बड़े फूड और क्रिक-कॉमर्स प्लेटफॉर्म में बदल दिया. अब जब उन्होंने सीईओ पद छोड़ा है, तो निवेशकों, कर्मचारियों और बाजार की नजर इस बात पर है कि एटर्नल ग्रुप की आगे की दिशा कैसी होगी.

स्पाइसजेट अहमदाबाद से शारजांह के लिए शुरू करेगी उड़ान

नई दिल्ली, 21 जनवरी. किफायती विमान सेवा कंपनी स्पाइसजेट अगले महीने गुजरात के अहमदाबाद से शारजांह के लिए उड़ान शुरू करेगी. एयरलाइंस ने बताया कि नयी उड़ान मंगलवार और बुधवार को छोड़कर सप्ताह में पांच दिन उपलब्ध रहेगी. इस नॉन स्टॉप सेवा की शुरुआत 05 फरवरी से होगी. इसके लिए बुकिंग शुरू हो गयी है. कहा गया है कि इस नयी उड़ान से संयुक्त अरब अमीरातऔर भारत के बीच हवाई संपर्क बढ़ेगा. दुबई के बाद यूएई में यह उसका दूसरा गंतव्य होगा.

शेयर बाजार लगातार तीसरे दिन टूटा

मुंबई, 21 जनवरी. ग्रीनलैंड को लेकर जारी वैश्विक अनिश्चितता के बीच शेयर बाजारों में बुधवार को लगातार तीसरे दिन गिरावट रही और बीएसई के 30 शेयरों वाले संवेदी सूचकांक सेंसेक्स में 1,282 अंक का उतार-चढ़ाव देखा गया.

घरेलू स्तर पर रुपये पर जारी दबाव का असर भी देखा जा रहा है. रुपया फिलहाल मंगलवार के मुकाबले 74 पैसे नीचे 91.71 रुपये प्रति डॉलर पर है. भारतीय मुद्रा पहली बार इस स्तर तक टूटी है. सेंसेक्स सुबह 386 अंक नीचे खुला. यह दोपहर से पहले 81,124.45 अंक तक उतरने के बाद दोपहर बाद 82,407.05 अंक तक चढ़ा. इस प्रकार सूचकांक ने एक ही दिन में 1,282 अंक का उतार-चढ़ाव देखा. अंत में पिछले कारोबारी दिवस की तुलना में 270.84 अंक (0.33 प्रतिशत) नीचे 81,909.63 अंक पर बंद हुआ जो 08 अक्टूबर 2025 के बाद का निचला स्तर है. इससे पहले, मंगलवार को सेंसेक्स 1,066 अंक गिरा था. नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक एक समय 312 अंक तक टूटने के बाद अंत में 75 अंक यानी 0.30 प्रतिशत नीचे 25,157.50 अंक पर बंद हुआ.

यह सूचकांक का 14 अक्टूबर 2025 के बाद का निचला स्तर है. मझौली और छोटी कंपनियों में ज्यादा गिरावट रही. निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 1.10 अंक और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.90 अंक लुढ़क गया.

डाक से निर्यात पर भी छोटे निर्यातकों को कर लाभ

राज्य और केंद्रीय करों एवं शुल्कों पर छूट जैसे निर्यात लाभ देने की व्यवस्था

निर्यात प्रक्रिया को सरल और व्यापक बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम

नई दिल्ली, 21 जनवरी. डाक विभाग ने केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा हाल में जारी अधिसूचनाओं के अनुसार डाक चैनल के माध्यम से किए गए निर्यातों के लिए शुल्क वापसी, निर्यातित उत्पादों पर शुल्क और करों में छूट तथा राज्य और केंद्रीय करों एवं शुल्कों पर छूट जैसे निर्यात लाभ देने की व्यवस्था प्रारंभ कर दी है.

निर्यात की खेपों पर शुल्कों और करों की छूट को डॉक के जरिए भेजी जाने वाली निर्यात-खेप पर भी लागू करने की सीबीआईसी की व्यवस्था 15 जनवरी 2026 से प्रभावी की गयी है. यह जानकारी संचार विभाग की जारी एक विज्ञप्ति में दी गयी. मंत्रालय ने इस पहल को खासकर सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों, कारीगरों, स्टार्टअप और छोटे निर्यातकों के लिए निर्यात प्रक्रिया को सरल और व्यापक बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम बताया है.छोटी इकाइयां छोटे और मध्यम मूल्य की निर्यात की खेपों को बाहर भेजने के लिए डाक नेटवर्क पर बहुत अधिक निर्भर हैं. बयान में कहा गया है कि एकीकृत माल एवं सेवा कर की रिफंड व्यवस्था के पहले से लागू होने के कारण, डाक चैनल के माध्यम से निर्यात पर भी कर और शुल्कों में लाभ का प्रोत्साहन मिलने से निर्यातकों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढती है.

> इस योजना के लिए डाक विभाग और सीबीईसी ने डाक घर निर्यात केंद्र सुविधा चालू की है. यह एक ही छत के नीचे शुरू से अंत तक निर्यात सुविधा प्रदान करती है .इस समय देश भर में ऐसे 1,013 केंद्र संचालित किये जा रहे हैं, जो दूरदराज और वंचित क्षेत्रों से निर्यातकों को बुकिंग, डिजिटल दस्तावेजीकरण और निर्बाध सीमा शुल्क निकासी के माध्यम से वैश्विक बाजारों तक पहुंच प्रदान करते हैं. भारतीय डाक अब निर्यात माल को उठाने, उनके दस्तावेजीकरण, ऑनलाइन भुगतान, फेसलेस सीमा शुल्क निकासी और तत्क्षण निगरानी सहित एकल-खिड़की, संपूर्ण निर्यात समाधान प्रदान करता है.

आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन 3.7 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली, 21 जनवरी. इस्पात और बिजली क्षेत्र के मजबूत प्रदर्शन से देश के आठ प्रमुख उद्योगों का उत्पादन दिसंबर 2025 में सालाना आधार पर 3.7 प्रतिशत बढ़ गया. यह अगस्त 2025 के बाद प्रमुख उद्योगों के उत्पादन में चार महीने में सबसे तेज बढ़ोतरी है.

इससे पहले, नवंबर 2025 में प्रमुख उद्योगों का उत्पादन 2.1 प्रतिशत और दिसंबर 2024 में 5.1 प्रतिशत बढ़ा था. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा मंगलवार को जारी आंकड़ों के अनुसार, आठ उद्योगों में से तीन के उत्पादन में गत दिसंबर में गिरावट दर्ज की गयी जबकि अन्य पांच उद्योगों के उत्पादन में वृद्धि हुई है. इस्पात उद्योग का उत्पादन 6.9 प्रतिशत और बिजली का 5.3 प्रतिशत बढ़ा है. सीमेंट का उत्पादन 13.5 प्रतिशत और उर्वरकों का 4.1 प्रतिशत बढ़ा है. कोयले के उत्पादन में 3.6 फीसदी की वृद्धि देखी गयी. कोर उद्योगों के उत्पादन में 28 प्रतिशत से अधिक का भारांश रखने वाले रिफाइनरी उत्पादों के उत्पादन में एक प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी.

चावल, चीनी, दालों में तेजी खाद्य तेलों में घट-बढ़

नई दिल्ली, 21 जनवरी. घरेलू थोक जिंस बाजारों में मंगलवार को चावल के औसत भाव बढ़ गये जबकि गेहूं की कीमतों में टिकाव रहा. चीनी और दालों के दाम भी बढ़े. खाद्य तेलों में उतार-चढ़ाव का रुख रहा. औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत पांच रुपये बढ़कर 3,854 रुपये प्रति क्विंटल पर पहुंच गयी. गेहूं 2,856 रुपये प्रति क्विंटल पर लगभग स्थिर रहा. आटे की कीमत भी दो रुपये बढ़ी. दाल-दलहनों में तेजी का रुख रहा. तुअर दाल औसतन 33 रुपये प्रति क्विंटल चढ़ी. उड़द दाल 22 रुपये मसूर दाल 17 रुपये मजबूत हुई.

छत्रपति संभाजीनगर में खुला पहला स्टोर छत्रपति

संभाजीनगर, 21 जनवरी (वार्ता) शिशु और मातृत्व उत्पादों के अग्रणी ब्रांड पोपीज बेबी केयर ने महाराष्ट्र में अपना पहला स्टोर छत्रपति संभाजीनगर में शुरू किया है. स्टोर का उद्घाटन कलासागर एवं लोकमत सखी मंच की संस्थापक अध्यक्ष आशुजी दरदा ने किया.

यह कंपनी का देश में 103वां स्टोर है. नये स्टोर में शिशु परिधान, बेबी केयर की आवश्यक वस्तुएं, मातृत्व परिधान, खिलौने और विभिन्न उपकरणों की विस्तृत रेंज उपलब्ध है. सभी उत्पाद शिशुओं की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री से तैयार किये गये हैं. कंपनी के अनुसार, पोपीज बेबी केयर 28 गुणवत्ता जांच बिंदुओं सहित कड़े गुणवत्ता मानकों का पालन करती है. उद्घाटन के दौरान प्रस्तुत बांस कलेक्शन को लोगों ने खूब सराहा. उद्घाटन समारोह में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष रेखाजी राठी अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं.

समाचार विशेष

चुनावी रण में भाजपा के लिए कई रोड़े

कोलकाता. देश भर में पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव 2026 को लेकर चर्चाएं शुरू हो गई है. चुनाव भले भी अभी दूर जरूर है, लेकिन राजनीति के पहिए पूरी रफ्तार में घूमने लगे हैं. यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि ममता बनर्जी के उस सामाजिक मॉडल की अग्निपरीक्षा है, जिसने एक दशक से अधिक समय तक बंगाल की राजनीति को दिशा दी है.

मार्च-अप्रैल में संभावित चुनाव और 7 मई 2026 को विधानसभा का कार्यकाल समाप्त होने के साथ ही राज्य की राजनीति दो स्पष्ट ध्रुवों-टीएमसी और भाजपा में सिमटती जा रही है.

महिला वोट सत्ता की असली चाबी- ममता बनर्जी की राजनीति का सबसे स्थायी आधार महिलाएं रही हैं. लक्ष्मी भंडार, कन्याश्री, रूपश्री, आनंदधारा और सबला जैसी योजनाओं ने सरकार और महिला मतदाता के बीच सीधा संबंध बनाया है. 2024 के लोकसभा चुनावों में महिला मतदाताओं की संख्या पुरुषों के लगभग बराबर रही और यही वह सामाजिक सच्चाई है जिसने ममता को लगातार बढ़त दिलाई. लक्ष्मी भंडार जैसी योजनाएं अब कल्याण नहीं, चुनावी सुरक्षा कवच बन चुकी हैं. बंगाल में आज चुनावी गणित नहीं, महिला मनोविज्ञान सत्ता तय करता है. यही कारण है कि चुनाव से पहले महिलाओं के लिए किसी नई या संशोधित योजना की संभावना को नजर-अंदाज नहीं किया जा सकता.

नीतीश मॉडल का बंगाल संस्करण- महिला सशक्तीकरण के जरिये सत्ता का सामाजिक आधार मजबूत करने की यह रणनीति बिहार में नीतीश कुमार ने अपनाई थी. जीविका दीदियां, आरक्षण और छात्रवृत्तियों ने वहां सत्ता को स्थायित्व दिया. बंगाल में ममता बनर्जी ने इसी मॉडल को स्थानीय जरूरतों के मुताबिक ढालते हुए आधी आबादी को अपना कोर वोट बैंक बना लिया.

फैसला किसके हाथ?

बंगाल 2026 अब केवल सरकार बनाम विपक्ष की लड़ाई नहीं रह गई है. यह कल्याण बनाम पहचान, महिला वोट बनाम ध्रुवीकरण और भरोसे बनाम असंतोष की निर्णायक जंग है. ममता बनर्जी अब भी सबसे बड़ी पार्टी बनने की स्थिति में हैं, लेकिन यह उनकी अब तक की सबसे कठिन लड़ाई होगी. वहीं भाजपा के लिए सत्ता का दरवाजा पहली बार सचमुच खुलता दिख रहा है. आखिरकार फैसला इस बात पर होगा कि बंगाल का मतदाता डर से वोट करता है या भरोसे से.

फड़नवीस का कद और बढ़ा

मुंबई. करीब 11 साल पहले 2014 के अंत में जब देवेंद्र फड़नवीस ने महाराष्ट्र के पहले भाजपाई मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली थी तब शायद किसी ने नहीं सोचा होगा कि मराठा वर्चस्व वाले इस प्रदेश में एक ब्राह्मण नेता इतना शक्तिशाली हो जाएगा.

2019 में शिव सेना से तालमेल टूटने और उद्धव ठाकरे के मुख्यमंत्री बनने के बाद आमतौर पर यह धारणा थी कि अब भाजपा के लिए मुश्किल होगी और फड़नवीस के लिए तो और ज्यादा मुश्किल होगी.

उसी समय फड़नवीस ने यह

शेर कहा था, पानी उतरता देख कर किनारे पर घर मत बना लेना, मैं समंदर हूं लौट कर आऊंगा. आज उनके इस शेर की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है. विधानसभा चुनाव में अकेले भाजपा को बहुमत के नजदीक पहुंचा देने का श्रेय भी उनको मिला था लेकिन उसके बाद ग्रामीण और शहरी निकाय चुनावों में भाजपा को मिली भारी भरकम कामयाबी ने नेतृत्व की टॉप लीग में उनकी जगह और मजबूत कर दी है. खासतौर से मुंबई महानगरपालिका की जीत ने उनका कद ज्यादा बढ़ाया है. पहली बार मुंबई में भाजपा का मेयर बनने जा रहा है.

असल में देवेंद्र फड़नवीस सरकार और संगठन दोनों के चेहरे के तौर पर उभरे हैं. उनके प्रति संघ का सद्भाव पहले से है. अब उन्होंने संगठन का भी समर्थन पूरी तरह से हासिल कर लिया है. शहरी निकाय चुनावों के बाद उन्होंने पहला फोन मुंबई के अध्यक्ष अमित साटम को किया और दूसरा फोन प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण को किया.

> फड़नवीस ने यह दिखाया कि भाजपा का संगठन सबसे महत्वपूर्ण है. अपने श्रेय लेने की बजाय उन्होंने संगठन को पहले श्रेय दिया. उन्होंने अपने को संगठन के मुख्यमंत्री के तौर पर स्थापित किया है. वे मुख्यमंत्री बनने के बाद भी पार्टी कार्यकर्ताओं और आम लोगों के लिए हर दिन उपलब्ध होते हैं. इस बात को भी भाजपा संगठन के लोग याद करते हैं कि 2024 के लोकसभा चुनाव में महाराष्ट्र में एनडीए के खराब प्रदर्शन के बाद फड़नवीस ने इस्तीफे की पेशकश की थी और दिल से पेशकश की थी.

के. कविता के साथ काम करेंगे पीके?

हैदराबाद. चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की तेलंगाना की राजनीति में बीआरएस की पूर्व नेता के. कविता की ओर से बनाई गई नई पार्टी के गठन में अहम भूमिका निभाने की संभावना जताई जा रही है. दोनों नेताओं के बीच इसे लेकर कई बैठकें भी हो चुकी हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि तेलंगाना की राजनीति में एक नई ताकत खड़ी करने की दिशा में गंभीर प्रयास चल रहे हैं.

सूत्रों के मुताबिक, प्रशांत किशोर ने के. कविता के साथ काम करने में रुचि दिखाई है और पिछले दो महीनों में हैदराबाद में दोनों के बीच कम से कम दो अहम बैठकें हो चुकी हैं. बताया जा रहा है कि हाल के हफ्तों में इन चर्चाओं में काफी ज्यादा तेजी आई है, जिससे कविता की ओर से नई पार्टी के गठन की तैयारियों को तेज करने की कोशिश साफ नजर आती है. हालांकि, इस पूरे घटनाक्रम पर अभी तक किसी भी पक्ष की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है.

संक्रांति के दौरान पांच दिनों तक चली मीटिंग- संक्रांति पर्व के दौरान के. कविता और प्रशांत किशोर के बीच लगातार पांच दिनों तक बैठकें चलीं. इन बैठकों में गंभीर विचार-विमर्श किया गया. के. कविता ने तेलंगाना की जनता के लिए एक ऐसी पार्टी बनाने का अपना विजन साझा किया, जिसमें जनता यह महसूस कर पाए कि संगठन का वास्तविक स्वामित्व उनके पास है और पार्टी जनता के नजरिए से काम करे. पीके और के. कविता के बीच हुई चर्चाओं में पार्टी की संगठनात्मक संरचना, जनसंपर्क रणनीति दीर्घकालिक राजनीतिक दिशा जैसे मुद्दों पर विस्तार से विचार किया गया. ऐसे में यह कहा जा सकता है कि पर्दे के पीछे नई पार्टी को औपचारिक रूप देने की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है.

समितियों का गठन, तेलंगाना की पहचान पर जोर

नई पार्टी में जमीनी स्तर पर काम करने के लिए के. कविता ने पहले ही 50 समितियों का गठन कर चुकी हैं. इन समितियों का काम जनता की जरूरतों और उनकी आकांक्षाओं के आधार पर नीतियों का ड्राफ्ट करना है. ये समितियां इस वक्त जमीनी स्तर पर विस्तृत अध्ययन कर रही हैं ताकि प्रस्तावित पार्टी का एजेंडा एक जन-केंद्रित शासन और स्थानीय मुद्दों को सही तरीके से प्रतिबिंबित कर सके. इस पूरे घटनाक्रम से जुड़े लोगों के मुताबिक, के. कविता तेलंगाना की स्वतंत्र राजनीतिक पहचान की रक्षा और उसे मजबूत करने के उद्देश्य से एक नई राजनीतिक पार्टी के गठन की दिशा में कोशिश तेज कर चुकी है.

विशेष | **डीएमके के लिए अपनों को दी नसीहत, तमिलनाडु में क्या है कांग्रेस की मजबूरी?**

स्टालिन के आगे राहुल का बदला रवैया?

चेन्नई. तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव नज़दीक आ रहे हैं. वहीं, ज्यादातर राज्यों में कमजोर होती जा रही कांग्रेस दक्षिण में सरकार का हिस्सा बनकर खुद को एक बार फिर मजबूत करने की उम्मीद कर रही है.

कांग्रेस गठबंधन के जरिए तमिलनाडु में सत्ता में आना चाहती है, यह एक ऐसी रणनीति है जिस पर उसकी टॉप लीडरशिप चर्चा कर रही है. तमिलनाडु कांग्रेस के एक गुट का मानना है कि उसे द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम (डीएमके) के साथ सरकार का हिस्सा बनना

चाहिए. हालांकि, डीएमके सत्ता साझा करने को तैयार नहीं है. कांग्रेस ने अपने राज्य नेताओं से अनुशासन बनाए रखने की अपील की है और चुनाव रणनीति से जुड़े मामलों पर गैर-ज़रूरी बयान देने से बचने के लिए साफ निर्देश जारी किए हैं.

राहुल-खड़गे ने की बड़ी बैठक- शनिवार को पार्टी के इंदिरा भवन मुख्यालय में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की अध्यक्षता में एक अहम बैठक हुई. बैठक में पूर्व पार्टी अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव और संगठन प्रभारी केसी वेणुगोपाल, तमिलनाडु पार्टी प्रभारी गिरीश चोडणकर, राज्य इकाई अध्यक्ष के. सेल्वपेरुंथगाई और सांसद पी. चिदंबरम, मणिक्कम टैगोर और कार्ति चिदंबरम सरीखे दिग्गज नेता शामिल हुए. बैठक के बाद खड़गे ने कहा, हमने तमिलनाडु के अपने नेताओं के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की. हमें विश्वास है कि तमिलनाडु के लोग संघ-भाजपा की कट्टरता, सांप्रदायिकता, संघ-विरोधी और भेदभावपूर्ण राजनीति के बजाय समानता, सामाजिक न्याय, सशक्तिकरण और सुशासन को चुनेंगे.